हिन्दी

कक्षा नवीं और दसवीं

नवीं कक्षा में दाखिल होने वाले विद्यार्थी की भाषा, शैली और विचार बोध का ऐसा आधार बन चुका होता है कि उसे उसके भाषिक दायरे के विस्तार और वैचारिक समृद्धि के लिए जरूरी संसाधन मुहैया कराए जाएं। माध्यमिक स्तर तक आते–आते विद्यार्थी किशोर हो गया होता है और उसमें बोलने, पढ़ने, लिखने के साथ–साथ आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होने लगती है। विद्यार्थी अपने परिवेश को और उसमें अपनी स्थिति को समझने लगता है। इस प्रकार उसमें एक राजनीतिक–सामाजिक चेतना का विकास होता है और वह उसमें अपनी अस्मिता के संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त भाषा का प्रयोग सीखता है। इस सब के साथ भाषा के सौंदर्यात्मक पक्ष, कथात्मक/गीतात्मकता, शब्द की दूसरी शक्तियों के बीच अन्तर, शब्दों के सुचिंतित प्रयोग तथा भाषा की नियमबद्ध प्रकृति आदि से विद्यार्थी का परिचय हो जाता है। इतना ही नहीं वह विभिन्न विधाओं और अभिव्यक्ति की अनेक शैलियों से भी वाकिफ़ होता है। अब विद्यार्थी की पढ़ाई आस–पड़ोस, राज्य–देश की सीमा को लांघते हुए वैश्विक क्षितिज तक फैल जाती है। इन बच्चों की दुनिया में समाचार, खेल, फिल्म तथा अन्य कलाओं के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाएं और अलग–अलग तरह की किताबें भी प्रवेश पा चुकी हैं।

इस स्तर पर मातृभाषा हिंदी का अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक भाषा के रूप में कुछ इस तरह से हो कि उच्चतर माध्यमिक स्तर तक पहुंचते–पहुंचते यह विद्यार्थियों की पहचान, आत्मविश्वास और विमर्श की भाषा

बन सके। प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी भाषा के लिखित प्रयोग के साथ–साथ सहज और स्वाभाविक मौखिक अभिव्यक्ति में भी सक्षम हो सके।

उद्देश्य

- कक्षा आठ तक अर्जित भाषिक कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना और चिंतन) का उत्तरोत्तर विकास।
- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद की क्षमता का विकास।
- स्वतंत्र और मौखिक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का विकास।
- भाषा के व्यावहारिक और सटीक प्रयोग की क्षमता का विकास।
- सहज अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता के साथ–साथ साहित्यिक अभिरुचि का विकास।
- ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।
- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी विविधताओं (राष्ट्रीयताओं, धर्म, जेंडर भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास।
- जाति, धर्म, लिंग, राष्ट्रीयताओं, क्षेत्र आदि से संबधित पूर्वग्रहों के चलते बनी रूढ़ियों की भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सजगता।
- विदेशी भाषाओं समेत गैर हिंदी भाषाओं की संस्कृति की विविधता से परिचय।

- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विविध प्रकार की अभिव्यक्तियों की मौखिक व लिखित क्षमता का विकास।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रानिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगत कराना और नए–नए तरीके से प्रयोग करने की क्षमता से परिचय।
- सघन विश्लेषण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और तर्कक्षमता का विकास।
- अमूर्तन की पूर्व अर्जित क्षमताओं का उत्तारोत्तर विकास।
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील और तर्कपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास।
- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक नज़रिए का विकास।
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में भाषिक क्षमताओं के विकास की उनकी अपनी विशिष्ट गति और प्रतिभा की पहचान।

पाठ्यसामग्री

इस स्तर पर विद्यार्थियों की रुचि, योग्यता तथा स्तरानुकूल भावी विकास की दृष्टि से पाठ्यसामग्री तैयार की जाएगी।

कक्षा नवीं और दसवीं के लिए

1. काव्य और गद्य संग्रह भाग–1 और भाग–2 (प्रमुख रचनाकारों द्वारा लिखे साहित्य की विविध विधाओं से संबंधित काव्य और गद्य के लगभग 15–18 पाठ होंगे।)

प्रश्न–अभ्यासों के द्वारा पाठगत संदर्भयुक्त भाषिक–प्रयोगों की ओर ध्यान दिलाते हुए भाषा की नियमबद्ध प्रकृति से परिचित कराया जाएगा। इस पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट के रूप में भिन्न ज्ञानानुशासनों में प्रयुक्त शब्दावली की सूची होगी।

पाठ्यसामग्री चयन व विकास में ध्यान रखा जाए –

- पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करते हुए मुख्यतः एन.सी.इ.आर.टी. नई पाठ्यपुस्तकों में आए विषयों को शामिल किया जा सकता है। नए पाठों का चयन भी हो सकता है।
- 20 प्रतिशत से 30 प्रतिशत विषय हिमाचली परिवेश से लिए जाएंगे जिसमें हिमाचली पृष्ठभूमि पर लिखी गई साहित्यिक रचनाओं और हिमाचली लेखकों की प्रासंगिक/छात्रोपयोगी रचनाओं को शामिल किया जाएगा।
- पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए समिति के अतिरिक्त सुझाव सुरक्षित हैं। पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के समय उन सुझावों को ध्यान में रखा जाएगा।
- नए पाठों का चयन करते हुए ध्यान रखा जाएगा कि पाठ्य–सामग्री सवैंधानिक मूल्यों, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में निहित राष्ट्रीय चिंताओं और इस स्तर के छात्र–छात्राओं के बोध–स्तर के अनुकूल हो।
- मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बच्चों के स्तर के अनुरूप सुंसगत विषयों का चयन।
- विषयों के चयन और प्रस्तुतीकरण में संविधान में निहित मूल्यों की परोक्ष ध्वनि।

- हर विषयों में एक दूसरे के बीच अंतर–अनुशासनात्मक और विषयगत अंतर्सम्बन्ध।
- विद्यालय में दिए जाने वाले ज्ञान और बच्चों के नित्यप्रति के अनुभव तथा उससे प्राप्त ज्ञान के बीच अंतर्सम्बन्ध।
- पर्यावरण संबंधी ज्ञान का प्रत्यक्ष–परोक्ष समावेश।
- लिंग समानता, शांति–स्वास्थ्य तथा मानसिक–शारीरिक हीनता से युक्त बच्चों की आवश्यकता के प्रति बच्चों में संवेदनशीलता उत्पन्न करना।
- कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण और मूल्यों का समावेश।
- भारतीय और प्रादेशिक कला और हस्तकला की विरासत का समावेश ताकि सौन्दर्य मूलक और मूल्यगत भावना का विकास हो सके।
- स्वतः सुलभ प्रौद्योगिकी का प्रयोग।
- क्रियाशीलता और सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना तथा बच्चों की सहभागिता और पहल सुनिश्चित करना।

2. पूरक पाठ्यपुस्तक – विद्यार्थियों में पठन रुचि पैदा करने के लिए साहित्य की विविध विधाओं की रचनाओं का एक–एक संकलन (भाग 1–2) कक्षा नवीं और दसवीं के लिए तैयार किया जाएगा।
3. अध्यापकों को संबोधित पुस्तक – (इसमें विविन्न विधाओं से संबंधित शिक्षण–युक्तियों का परिचय होगा।) इस पुस्तक में भाषा और व्याकरण से परिचित कराने की नई तकनीक पर भी चर्चा होगी। इसी पुस्तक में रचनात्मक और व्यावहारिक लेखन के अंतर्गत

पुस्तक–समीक्षा, यात्रावृतान्त, साक्षात्कार आदि पर ऐसी सामग्री होगी जिसके सहारे अध्यापक कक्षा में इनका अभ्यास करा सकेंगे। इसी पुस्तक में इलेक्ट्रानिक मीडिया संबंधी सामग्री के उपयोग से प्रभावशाली शिक्षण पर भी विचार होगा।

(यह पुस्तक नवीं और दसवीं के लिए संयुक्त रूप से तैयार की जाएगी।)

शिक्षण – युक्तियां

माध्यमिक कक्षाओं में अध्यापक की भूमिका उचित वातावरण के निर्माण में सहायक होनी चाहिए और साहित्य की पढ़ाई में इस बात पर ध्यान देने की जरूरत होगी कि –

- विद्यार्थी द्वारा की जा रही गलतियों को भाषा के विकास के अनिवार्य चरण के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी अबाध रूप से बिना झिझक लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति करने में उत्साह का अनुभव करें। विद्यार्थियों पर शुद्धि का ऐसा दबाव नहीं होना चाहिए कि वे तनावग्रस्त माहौल में पड़ जाएं। विद्यार्थियों को सहज, कारगर और रचनात्मक रूपों से इस तरह परिचित कराना उचित है कि वे स्वयं सहजरूप से भाषा का सृजन कर सकें। उन्हें भाषा संबंधी विविध कौशलों के विकास के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान किए जाने चाहिएं।
- गलत से सही दिशा की ओर पहुंचने का प्रयास हो। विद्यार्थी स्वतंत्र और अबाध रूप से लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति करें। अगर विद्यार्थी बार–बार गलती दोहराता है तो अध्यापक को अपनी अध्यापन शैली में

परिवर्तन की आवश्यकता होगी। वस्तुतः अध्यापक की शिक्षण–विधि ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थी के अधिगम में सहज सहयोग करे। अर्थ–संप्रेषण के लिए स्थानीय शैली और मुहावरों के प्रयोग से भी नहीं झिझकना चाहिए। वस्तुतः स्थानीय भाषा (बोली), मुहावरों का प्रयोग इस कौशल से करना चाहिए कि विद्यार्थी अभिप्राय ग्रहण कर सके और भाषा की कक्षा में रोचकता का विकास हो।

- ऐसे शिक्षण बिन्दुओं की पहचान की जाए जिससे कक्षा में विद्यार्थी निरंतर सक्रिय भागीदारी करें और अध्यापक भी इस प्रक्रिया में उनका साथी बनें।
- हर भाषा का अपना एक नियम और व्याकरण होता है। भाषा की इस प्रकृति की पहचान कराने में परिवेशगत और पाठ्गत संदर्भों का ही प्रयोग करना चाहिए। यह पूरी प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी स्वयं को शोधकर्ता समझें तथा अध्यापक इसमें केवल निर्देशन करें।
- हिंदी में क्षेत्रीय प्रयोगों, अन्य भाषाओं के प्रयोगों के उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है कि भाषा अलगाव में नहीं बनती और उसका परिवेश अनिवार्य रूप से बहुभाषिक होता है। अतः स्थानीय भाषा में प्रचलित शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोगों पर चर्चा करते हुए विद्यार्थियों में सहज जिज्ञासा का विकास किया जा सकता है जिससे उनमें सहज ही शोध–वृत्ति उत्पन्न होगी।

- कविता–वाचन के समय उचित लय, ताल, बलाघात, आरोह–अवरोह का ध्यान रखा जाए तो विद्यार्थी की भाषा अध्ययन में सहज रूचि उत्पन्न होगी।
- शारीरिक बाधाग्रस्त विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण–सामग्री का इस्तेमाल किया जाए तथा किसी भी प्रकार से उन्हें अन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समझा जाए।
- कक्षा में अध्यापक को हर प्रकार की विभिन्नताओं (जेंडर, जाति, वर्ग, धर्म) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मित करना चाहिए।
- परम्परा से चले आ रहे मुहावरों, कहावतों, (जैसेः रानी रूठेगी तो अपना सुहाग लेगी) आदि के जरिए विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रहों की समझ पैदा करनी चाहिए और उनके प्रयोग के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करनी चाहिए।
- मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियों–वीडियों कैसेट तैयार किए जाएं। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्ययन शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- वृतचित्रों और फीचर फिल्मों को शिक्षण–सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के ज़रिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग–अलग छटा दिखाई जा सकती है।

- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है शिक्षक के हाथ में तरह–तरह की पाठ्यसामग्री हो और वह उनका कक्षा में अलग–अलग मौकों में इस्तेमाल करे।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की प्रक्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोष, साहित्यकोष, संन्दर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इनके इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुंचकर संतुष्ट होने की जगह वे वास्तविक अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ जाएंगे। इससे शब्दों की अलग–अलग रंगत का पता चलेगा। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएंगे।
- कभी–कभार शब्दों की संदर्भगत तथा गहन व्याख्या कर विद्यार्थियों को शब्दों की गहन–उपयोगिता से परिचित करवाते हुए उनकी भाषा के अध्ययन के प्रति रूचि जगाई जा सकती है।

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से –

1. विद्यार्थी अगले स्तरों पर अपनी रूचि और आवश्यकता के अनुरूप हिंदी की पढ़ाई कर सकेंगे तथा हिन्दी में बोलने और लिखने में सक्षम हो सकेंगे।
2. अपनी भाषा दक्षता के चलते उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, समाज विज्ञान और अन्य पाठ्यक्रमों के साथ सहज संबद्धता (अंतर्संबंध) स्थापित कर सकेंगे।

3. दैनिक व्यवहार, आवेदन–पत्र लिखने, अलग–अलग किस्म के पत्र लिखने, तार (टैलिग्राम) लिखने, प्राथमिकी दर्ज कराने इत्यादि में सक्षम हो सकेंगे।
4. विद्यार्थी निजी अनुभवों के आधार पर भाषा का सृजनशील प्रयोग कर सकेंगे। उनमें स्थितियों को विश्लेषित करने की क्षमता विकसित होगी। वे विभिन्न विधाओं की प्रकृति को समझने में सक्षम होंगे।
5. विद्यार्थी अपने परिवेश से जुड़ पाने में सक्षम होंगे और अपने लोक–साहित्य से परिचित हो परिमार्जित और विविध भाषाओं के साहित्य से उसकी तुलना कर उनके और संबंध को समझने की ओर अग्रसर होंगे।
6. विद्यार्थी में सहज अभिव्यक्ति और अन्य भाषिक कौशलों का विकास होगा। अन्य भाषाओं को जानने समझने तथा उनमें रचित साहित्य को पढ़ने की रूचि उत्पन्न होगी।
7. हिंदी में दक्ष हो विद्यार्थी अन्य भाषाओं के प्रति संवेदनशील हो सकेंगे तथा हिन्दी में दक्षता को वे अन्य भाषा–सरंचनाओं की समझ विकसित करने के लिए इस्तेमाल कर सकेंगे।
9. शब्दों की प्रयुक्तियों की गहन समझ से भाषा के शास्त्रीय पक्ष और विविध भाषाओं के अंतर्संबंध को जानने की ललक पैदा होगी।

व्याकरण बिंदु

विद्यार्थियों को मातृभाषा के संदर्भ में व्याकरण के विभिन्न पक्षों का परिचय तीसरी कक्षा से ही मिलने लगता है। हिंदी भाषा में इन पक्षों और हिंदी की अपनी भाषागत

विशिष्टताओं की चर्चा पाठ्यपुस्तक और अन्य शिक्षण–सामग्री के समृद्ध संदर्भ में की जानी चाहिए। यद्यपि कक्षा 6 से 8 के लिए अलग से व्याकरण बिंदु दिए गए हैं। किंतु अध्यापन करते हुए शिक्षक को चाहिए कि व्याकरण के बिंदुओं पर नजर रखते हुए प्रसंगानुकूल चर्चा करे। छठी कक्षा से दसवीं कक्षा के लिए कुछ व्याकरणिक बिंदु नीचे दिए गए हैं जिन्हें कक्षा या विभिन्न चरणों के क्रम में नहीं रखा जा सकता बल्कि संदर्भ के अनुकूल इन बिंदुओं पर चर्चा होनी चाहिए।

संरचना और अर्थ के स्तर पर भाषा की विशिष्टताओं की परिधि इन व्याकरणिक बिंदुओं से कहीं अधिक विस्तृत है। वे बिंदु इन विशिष्टताओं का संकेत भर है जिनकी चर्चा पाठ के सहज संदर्भ में और बच्चों के आसपास उपलब्ध भाषायी परिवेश को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।

छठी कक्षा से नवीं कक्षा के लिए कुछ व्याकरण बिंदु

- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण
- लिंग, वचन, काल
- पदबंध में लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव
- वाक्य में कर्ता और कर्म के लिंग और वचन का क्रिया पर प्रभाव
- परसर्ग ने का क्रिया पर प्रभाव
- अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक, प्रेरणार्थक क्रियाएं
- सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्य
- कृतवाच्य, कर्मवाच्य
- समुच्चयबोधक शब्द और अन्य विकारी शब्द
- पर्यायवाची, विलोम, समास, अनेकार्थी, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द, मुहावरे